लक्ष्य इन चारों की क्रियाशीलता की एक साथ आवश्यकता होती है।

ईश्वर मीमांसा Theology

अरस्तू ने दो सत्तायें मानी है, एक स्वरूप या विज्ञान Form, दूसरी जड़ या द्रव्य। संसार की समस्त वस्तुएं इन्हीं दोनों के संयोग से बनी हैं संसार की विभिन्नता भी इन्हीं दोनों के विभिन्न प्रकार के संयोग के कारण ही अरस्तू मानते हैं कि गति केवल जड़ में सम्भव है, स्वरूप में नहीं।

1. ईश्वर विकास की पराकाष्ठा है — जगत विकास की श्रृंखला ही विकास की चरम पराकाष्ठा को ईश्वर कहा गया है ईश्वर नित्य है, वह अपरिणाम है, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ करता। ईश्वर केवल शुद्ध सत्ता मात्र ही अरस्तु ने जगत को ईश्वर का स्वरूप, निमित्त एवं लक्ष्य कारण माना

ईश्वर जगत का स्वरूप कारण है अनुसार किसी
स्वरूप कारण वह है जिसके आदर्श एवं
वस्तु की रचना हो ही स्वरूप कारण या रचना के
प्रत्ययात्मक होता है जगत के निर्माण की
लिये ईश्वर एक आदर्श स्वरूप है। जगत की परन्तु
वस्तुओं का निर्माण जड़ तत्व को उमा है स्वरूप
उसका निर्माण ईश्वर को आदर्श या स्वरूप
मानकर हुआ है।

3. ईश्वर जगत का निमित्त कारण है और जगत
ईश्वर स्वरूपमात्र एवं चेतन है और जगत का प्रवर्तक
की समस्त वस्तुओं की गति या परिणाम का प्रवर्तक ईश्वर
भी है जगत में जड़ और स्वरूप ही ईश्वर
में गति होती है और स्वरूप गतिदायक ही प्रवर्तक
में स्वयं में कोई गति है वह अप्रवर्तित निमित्त कारण है
ही इस प्रकार ईश्वर जगत का निमित्त कारण है।

4. ईश्वर जगत का लक्ष्य कारण है वह
ईश्वर विकास की चरम पराकाष्ठा है वह
पूर्ण एवं आदर्श स्वरूप ही जगत के विकास की
प्रक्रिया में ईश्वर के स्वरूप को लक्ष्य बनाया जाता है
वास्तव में ईश्वर वह आदर्श है जिसमें जगत के
समस्त गुणों और विशेषताओं की पूर्ण अभिव्यक्ति है
इस प्रकार संसार में जो-जो कमी या अभाव दृष्टिगोचर
होते हैं यदि उन्हें पूर्ण कर दिया जाये तो ईश्वर
बन जायेगा। इस प्रकार जगत के विकास की प्रक्रिया
या लक्ष्य कारण भी ईश्वर ही है।

5. विकास की प्रक्रिया का प्रवर्तक
विकास की प्रक्रिया का प्रवर्तक
अरस्तू ने विकास की प्रक्रिया का प्रवर्तक
ईश्वर को माना है। ~~परन्तु~~ अरस्तु का विचार है
कि ईश्वर का स्थान विचार एवं सत्ता की दृष्टि से
प्रथम ही ईश्वर संसार की गति का आद्य है। यह
स्वयं सिद्ध है ईश्वर जगत का वास्तविक कारण

नहीं है। यदि उसे यान्त्रिक कारण माना जाये तो उसके कारण का भी प्रश्न उठ खड़ा होगा। अरस्तू ने ईश्वर को लक्ष्य कारण माना है। ईश्वर तार्किक दृष्टि से जगत का आदि कारण है।

6. स्वरूप का स्वरूप – ईश्वर स्वरूप का स्वरूप है। चिन्तन की प्रक्रिया में ईश्वर एक साथ ही विषय भी है और विषयी भी है।

7. आनन्द स्वरूप – अरस्तू ने ईश्वर को आनन्द स्वरूप भी माना है। वास्तव में जो पूर्ण है आनन्दस्वरूप होना अनिवार्य ही है। ईश्वर पूर्ण है, विकास का चरम बिन्दु है। अतः ईश्वर का आनन्दस्वरूप होना स्वाभाविक ही है।

8. ईश्वर पुरुष-विशेष नहीं है – अरस्तू ने अपने ईश्वर को पुरुष विशेष नहीं माना है। उनके ईश्वर में न तो सत्ता है और न ही वैयक्तिकता है। ईश्वर तो स्वरूप मात्र है। उसमें विशेष तत्व का अभाव है, वह सामान्य प्रत्ययात्मक है। इसलिये उसे पुरुष-विशेष मानना सम्भव नहीं है।

आलोचना

अरस्तू के दर्शन में ईश्वर नाम का कोई भी...

ईश्वर को पुरुष विशेष नहीं माना है। उनके ईश्वर में न तो सत्ता है और न ही वैयक्तिकता है। ईश्वर तो स्वरूप मात्र है उसमें विशेष तत्त्व का अभाव है, वह सामान्य प्रत्ययात्मक ही इसलिये उसे पुरुष-विशेष जानना सम्भव नहीं है।

आलोचना

अरस्तू के दर्शन में ईश्वर जगत का औपचारिक, वास्तविक, अंतिम और निमित्त कारण है। यहाँ पर कुछ लोग अरस्तू में यन्त्रवाद (mechanism) दिखलाना चाहते हैं परन्तु अरस्तू के सिद्धान्त में विकास में कोई शक्ति पीछे से धक्का नहीं देती बल्कि अंत ही अपनी ओर खींचता है। इस प्रकार ईश्वर निमित्त कारण है, अंतिम कारण होने के नाते वह आदि प्रवर्तक है। जगत और उसकी गति दोनों ही काल से परे हैं